www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-6* *June 2025***

बिहार के कृषि गत क्षेत्र के विकास में पशुधन एंव डेयरी की भूमिका और इसके प्रभाव

डॉ0 नवल किशोर बैठा

पीजी अर्थशास्त्र विभाग, (एच.ओ.डी), एम.जे.के कॉलेज, बेतिया पश्चिम चंपारण (बिहार), बी.आर.ए बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांश

बिहार एक प्रमुख कृषि प्रधान राज्य है, जहां की अर्थव्यवस्था व्यापक रूप से कृषि आधारित है। इस संदर्भ में पशुधन और डेयरी क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये न केवल ग्रामीण आय का एक प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि ग्रामीण रोजगार, पोषण सुरक्षा और महिला सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान शोधपत्र का उद्देश्य बिहार में कृषि गत क्षेत्र के विकास में पशुधन और डेयरी उद्योग की भूमिका का मूल्यांकन करना है। डेयरी उत्पाद जैसे दूध, दही, घी, आदि न केवल घरेलू खपत को पूरा करते हैं, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करते हैं। 'राष्ट्रीय गोकुल मिशन, 'राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम', और बिहार सरकार द्वारा संचालित विभिन्न पशुधन स्वास्थ्य सेवाओं एवं कृत्रिम गर्भाधान योजनाओं से इस क्षेत्र को संस्थागत समर्थन प्राप्त हो रहा है। इन योजनाओं ने दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, पशुधन की नस्ल सुधार, एवं पशुपालकों की आय में सुधार जैसे सकारात्मक प्रभाव डाले हैं। हालाँकि, यह क्षेत्र कुछ चुनौतियों से भी जूझ रहा है, जैसेदृ पर्याप्त पशु चिकित्सा सेवाओं की कमी, बाजार तक सीमित पहुँच, वैज्ञानिक प्रशिक्षण की अपर्याप्तता, और चरागाहों की घटती उपलब्धता। इन चुनौतियों के समाधान हेतु राज्य को दीर्घकालिक योजना, सहकारी ढांचे के सशक्तिकरण, और निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि पशुधन और डेयरी क्षेत्र को समुचित नीति, वित्तीय सहायता, और तकनीकी नवाचार से सशक्त किया जाए, तो यह बिहार के कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि राज्य के सतत विकास को भी गति प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द– बिहार, कृषि विकास, पशुधन, डेयरी उद्योग, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, दुग्ध उत्पादन, रोजगार, सरकारी योजनाएं, महिला सशक्तिकरण, सतत विकास।

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसकी आर्थिक संरचना में कृषि क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। विशेषतः बिहार जैसे राज्य, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, वहां कृषि आधारित गतिविधियाँ आजीविका का मुख्य साधन हैं। बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था न केवल खाद्य उत्पादन तक सीमित है, बल्कि इसमें पशुपालन और डेयरी क्षेत्र की भी विशेष भूमिका रही है। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो पशुधन बिहार के ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है, जो न केवल किसानों की आय में सहायक है, बल्कि कृषि की स्थिरता एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती में भी योगदान देता है। पशुपालन और डेयरी क्षेत्र भारतीय कृषि व्यवस्था का पुरातन अंग रहे हैं। ग्रामीण भारत में पशुओं को केवल उत्पादन इकाई नहीं, बल्कि एक पारिवारिक संसाधन के रूप में देखा जाता है। यह परंपरा बिहार में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ गाय, भैंस, बकरी जैसे पशुओं का पालन व्यापक रूप से किया जाता है। बीते कुछ दशकों में सरकार द्वारा पशुधन और डेयरी क्षेत्र को संगठित रूप देने के प्रयासों से इसमें व्यावसायिक संभावनाएं भी उत्पन्न हुई हैं। डेयरी उद्योग विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता का माध्यम बना है। विषय की

पृष्ठभूमि को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन की सामाजिक–सांस्कृतिक स्वीकृति, इसकी आजीविका में भूमिका तथा बदलते आर्थिक परिदृश्य में इसकी उपयोगिता को समझें। आर्थिक उदारीकरण के बाद पशुधन क्षेत्र को भी उत्पादन बढ़ोतरी, गुणवत्ता सुधार और बाजार से जोड़ने के प्रयासों ने एक नई दिशा दी है। इन सभी कारकों ने इस क्षेत्र को अध्ययन का एक समृद्ध और प्रासंगिक विषय बना दिया है।

बिहार की कुल जनसंख्या का लगभग 80 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और अधिकांश लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर हैं। हालांकि भूमि जोतने की औसत क्षमता कम है और सिंचाई की सीमाएं मौजूद हैं, फिर भी किसान जीविका के रूप में पशुपालन को एक भरोसेमंद विकल्प मानते हैं। वर्षा आधारित खेती की अस्थिरता ने भी किसानों को वैकल्पिक स्रोतों की ओर प्रवृत्त किया है, जिसमें डेयरी व्यवसाय प्रमुख है। राज्य की आर्थिक नीतियों में कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई है, और 'मुख्यमंत्री डेयरी विकास योजना', 'राष्ट्रीय गोकुल मिशन' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से पशुधन आधारित आयवर्धन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बिहार में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी, डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना, तथा ग्रामीण बाजारों के सुदृढ़ीकरण जैसे प्रयास इस बात का प्रमाण हैं कि यह क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है।

आज जब कृषि क्षेत्र पर जनसंख्या दबाव और जलवायु परिवर्तन के कारण संकट गहरा रहा है, तब पशुपालन एवं डेयरी एक स्थायी और विविधतापूर्ण आर्थिक विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। ये न केवल आय का अतिरिक्त स्रोत प्रदान करते हैं, बल्कि इससे कृषि प्रणाली में पोषण सुरक्षा, जैविक खाद की उपलब्धता तथा रोजगार के अवसर भी सुनिश्चित होते हैं। ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। महिला स्व–सहायता समूहों के माध्यम से दुग्ध संग्रहण और विपणन का कार्य व्यापक रूप से किया जा रहा है, जिससे महिला सशक्तिकरण को भी बल मिला है। इसके अतिरिक्त, पशुधन से जुड़ी गतिविधियाँ जैसे कृत्रिम गर्भाधान, टीकाकरण, पशु पोषण और नस्ल सुधार, ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न कर रही हैं।

बिहार में पशुधन और डेयरी उद्योग का वर्तमान परिदृश्य

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल किसानों के लिए एक वैकल्पिक आय का साधन है, बल्कि खाद्य सुरक्षा, पोषण, और रोजगार के स्तर पर भी इसका व्यापक प्रभाव है। वर्तमान समय में बिहार पशुधन और दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक सक्रिय भागीदार के रूप में उभर रहा है। बिहार में पशु संसाधनों की विविधता और संख्या इसकी पारंपरिक कृषि व्यवस्था का सशक्त हिस्सा हैं। राज्य में गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सूअर जैसे प्रमुख पशु संसाधनों की भरमार है। 'वर्ष 2019 के 20वें पशुगणना रिपोर्ट' के अनुसार, बिहार में कुल पशुधन की संख्या लगभग 3.29 करोड़ थी, जिसमें गाय और भैंस का योगदान सर्वाधिक रहा। देसी नस्ल की गायों के साथ–साथ संकर नस्लों का पालन भी बढ़ रहा है, जो अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। भैंस, जिनका दूध वसायुक्त होता है, ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से लोकप्रिय है। इसके साथ ही बकरी पालन भी बिहार के विभिन्न जिलों में आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण गतिविधि बन चुका है, जो कम लागत में अधिक लाभ की संभावना प्रदान करता है। बिहार दुग्ध उत्पादन में निरंतर प्रगति कर रहा है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के अनुसार, वर्ष 2022–23 में राज्य में कुल दुग्ध उत्पादन लगभग 104 लाख टन दर्ज किया गया, जो राज्य के किसानों की बढ़ती भागीदारी और पशुधन प्रबंधन में सुधार को दर्शाता है। यह उत्पादन न केवल घरेलू खपत को पूरा करता है, बल्कि राज्य के बाहर भी वितरित किया जा रहा है। दुग्ध वितरण का प्रमुख हिस्सा बिहार राज्य दुग्ध सहकारी महासंघ लिमिटेड (ब्ब्डथ्म्ब्) के अंतर्गत "सुधा" ब्रांड द्वारा किया जाता है, जो राज्य के विभिन्न जिलों में दुग्ध संग्रहण केंद्रों के माध्यम से दूध एकत्र करता है। इसके अंतर्गत लाखों दुग्ध उत्पादक किसानों को नियमित आय का स्रोत प्राप्त होता है। इस वितरण प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसानों को बाजार से सीधे जोड़ती है, जिससे बिचौलियों की भूमिका कम हो जाती है और किसानों को उनका उचित मूल्य मिल पाता है।

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन आजीविका का अभिन्न हिस्सा है। अधिकांश छोटे और सीमांत किसान पशुपालन को कृषि के पूरक के रूप में अपनाते हैं। पशुओं से प्राप्त दूध, गोबर, गोमूत्र आदि का उपयोग घरेलू आवश्यकताओं के साथ–साथ बाजार आधारित व्यापार में भी किया जाता है। महिला स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी पशुपालन में बढ़ी है, जिससे ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में अवसर प्राप्त हुए

हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार और केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं जैसे 'राष्ट्रीय पशुधन मिशन', 'मुख्यमंत्री डेयरी विकास योजना', और 'गोकुल मिशन' ने पशुपालन को तकनीकी दृष्टि से अधिक संगठित और लाभदायक बनाया है। पशुपालन में वृद्धि के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जैसे पशु चिकित्सा सेवाओं की सीमित पहुँच, टीकाकरण की धीमी गति, पशु आहार की कमी, और चरागाहों की अनुपलब्धता। इन समस्याओं के समाधान हेतु सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है, जिससे यह क्षेत्र और अधिक सशक्त हो सके।

पशुधन एवं डेयरी क्षेत्र का आर्थिक महत्त्व

बिहार जैसे कृषि आधारित राज्य में पशुधन और डेयरी क्षेत्र न केवल पारंपरिक आजीविका का स्रोत हैं, बल्कि वर्तमान में यह आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में उभर कर सामने आए हैं। सीमांत और लघु किसानों की आय वृद्धि, ग्रामीण रोजगार सृजन, और विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण में इन क्षेत्रों की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। जलवायु परिवर्तन और कृषि उत्पादन की अनिश्चितता के इस दौर में पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय ने एक स्थायी और टिकाऊ विकल्प प्रदान किया है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिल रही है। पशुपालन और डेयरी गतिविधियाँ बिहार के ग्रामीण समुदायों के लिए आय के एक सतत स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। विशेष रूप से उन परिवारों के लिए, जिनके पास सीमित कृषि भूमि है, पशुधन एक प्रभावी आर्थिक पूरक साबित हुआ है। गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं से प्राप्त दूध, गोबर, मूत्र, एवं अन्य उत्पादों का घरेलू उपभोग के साथ–साथ बाज़ार में भी व्यापार होता है, जिससे अतिरिक्त आमदनी सुनिश्चित होती है। बिहार सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा पशुपालकों को दी जा रही सब्सिडी, बैंक ऋण, कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं, एवं पशु बीमा योजनाओं ने इस क्षेत्र को आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी बनाया है। विशेष रूप से ष्सुधा डेयरीष जैसे सहकारी मॉडलों ने दूध बेचने वाले किसानों को प्रत्यक्ष भुगतान की सुविधा देकर उनकी आमदनी में पारदर्शिता और नियमितता सुनिश्चित की है। ग्रामीण स्तर पर दुग्ध संग्रहण केंद्रों की स्थापना ने छोटे किसानों को भी बाजार से जोड़ने में सहायता की है।

पशुधन और डेयरी क्षेत्र ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए द्वार खोले हैं। यह क्षेत्र केवल पशुपालकों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चारा उत्पादन, दुग्ध परिवहन, पशु चिकित्सा सेवाएँ, डेयरी उत्पादों की प्रोसेसिंग और विपणन जैसे अनेक सहायक क्षेत्रों में भी रोजगार उपलब्ध होते हैं। खासकर युवा वर्ग के लिए यह एक उद्यमशीलता का क्षेत्र बनकर उभरा है। कम पूंजी में शुरू होने वाला डेयरी व्यवसाय आज स्वरोजगार का एक लोकप्रिय विकल्प बन चुका है। सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और तकनीकी सहयोग से ग्रामीण युवाओं में पशुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, बड़े स्तर पर डेयरी प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना से स्थानीय स्तर पर स्थायी नौकरियों का भी निर्माण हो रहा है। पशु मेले, डेयरी प्रदर्शनी और नस्ल सुधार कार्यक्रमों में भी मानव संसाधन की आवश्यकता होती है, जो ग्रामीण श्रमिकों को कार्य के अवसर प्रदान करता है।

पशुपालन और डेयरी क्षेत्र ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। परंपरागत रूप से पशुओं की देखभाल और दुग्ध संग्रह का कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता रहा है। अब जब यह गतिविधियाँ संगठित रूप ले रही हैं, तब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों, महिला डेयरी समितियों, एवं दुग्ध सहकारिताओं के माध्यम से प्रशिक्षण, ऋण, और बाजार से जुड़ने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हो रही है, बल्कि उन्हें निर्णय लेने की शक्ति, सामाजिक सम्मान और पारिवारिक सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। कई महिला किसान अपने समुदाय की नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरी हैं, जिससे ग्राम्य स्तर पर लिंग समानता को भी बल मिल रहा है। इस प्रकार, पशुधन और डेयरी क्षेत्र बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आय, रोजगार और सामाजिक बदलाव का संवाहक बन कर उभरा है। इसके सतत विकास के लिए आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर इसे और अधिक संरचित किया जाए तथा तकनीकी व वित्तीय सहयोग को दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाया जाए।

सरकारी योजनाएँ एवं नीतियाँ

बिहार की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पशुधन एवं डेयरी क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे सुदृढ़ करने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर अनेक योजनाएँ और नीतियाँ प्रारंभ की गई हैं।

इन योजनाओं का उद्देश्य पशुपालकों को आर्थिक, तकनीकी एवं सामाजिक समर्थन प्रदान कर उनकी आय बढ़ाना, पशुधन की उत्पादकता सुधारना, और दुग्ध उद्योग को संगठित एवं लाभकारी बनाना है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसे 2014 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य देशी नस्लों की गायों और भैंसों के संरक्षण, विकास और उत्पादकता वृद्धि को सुनिश्चित करना है। बिहार में इस योजना के अंतर्गत नस्ल सुधार कार्यक्रम, कृत्रिम गर्भाधान, गोकुल ग्रामों की स्थापना तथा पशुपालकों को तकनीकी प्रशिक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। इसके माध्यम से पशुधन की गुणवत्ता में सुधार कर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की संभावनाओं को साकार किया जा रहा है। यह योजना पशुपालकों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो रही है, जिससे पशुधन आधारित आय को स्थायित्व प्राप्त हो रहा है। पशुपालकों के लिए पशुओं की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण पशु की मृत्यु से उनकी आय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस समस्या के समाधान के लिए पशुधन बीमा योजना को आरंभ किया गया, जिसके अंतर्गत सरकार नाममात्र के प्रीमियम पर पशुओं का बीमा कराती है। बिहार में विशेष रूप से गाय और भैंस को इस योजना के अंतर्गत शामिल किया गया है। योजना के अंतर्गत पशु की मृत्यु की स्थिति में मुआवजा प्रदान किया जाता है, जिससे पशुपालक आर्थिक संकट से उबर पाते हैं। यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन को एक सुरक्षित व्यवसाय के रूप में स्थापित करने में सहायक रही है।

डेयरी क्षेत्र में स्वरोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा डेयरी उद्यमिता विकास योजना शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत डेयरी फार्म, दूध संग्रहण केंद्र, चिलिंग प्लांट, दुग्ध प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना हेतु अनुदान और ऋण सहायता प्रदान की जाती है। बिहार में इस योजना ने युवा उद्यमियों, महिला स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों को डेयरी व्यवसाय से जोड़ने का अवसर दिया है। योजना की सहायता से दुग्ध मूल्य श्रृंखला को संगठित रूप दिया जा रहा है, जिससे किसानों की आमदनी में वृद्धि और बाजार तक सीधी पहुँच सुनिश्चित हो रही है।

बिहार सरकार ने भी पशुपालन एवं डेयरी विकास को सशक्त बनाने हेतु अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं। मुख्यमंत्री डेयरी विकास योजना के अंतर्गत ग्रामीण युवाओं को डेयरी फार्म खोलने हेतु अनुदान व तकनीकी सहायता दी जाती है। बिहार स्टेट मिल्क कोऑपरेटिव फेडरेशन के माध्यम से 'सुधा' ब्रांड के अंतर्गत डेयरी उत्पादों का उत्पादन, संग्रहण, प्रोसेसिंग एवं विपणन किया जाता है। इसके अंतर्गत दुग्ध उत्पादकों को उचित मूल्य, नियमित भुगतान एवं तकनीकी प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार द्वारा नस्ल सुधार, टीकाकरण अभियान, मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों की तैनाती एवं चारा विकास कार्यक्रम जैसे अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। ये सभी पहलें इस दिशा में प्रमाण हैं कि बिहार सरकार पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र को ग्रामीण समृद्धि के केंद्र में लाकर आर्थिक विकास का नया मॉडल प्रस्तुत कर रही है।

बाजार, आपूर्ति श्रृंखला एवं विपणन की स्थिति

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग एक स्थायी और सशक्त क्षेत्र के रूप में स्थापित हो चुका है। लेकिन इस क्षेत्र की आर्थिक सक्षमता केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है जब उत्पादक अपने उत्पाद को उचित मूल्य पर उपभोक्ताओं तक पहुँचाने में सक्षम हो। इसके लिए एक सुगठित आपूर्ति श्रृंखला, पारदर्शी विपणन प्रणाली, और बाजार तक सुगमता से पहुँच आवश्यक होती है। बिहार में दुग्ध विपणन के क्षेत्र में सहकारी समितियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। विशेष रूप से बिहार स्टेट मिल्क कोऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड के अंतर्गत कार्यरत सुधा डेयरी सहकारी प्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने दुग्ध उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच एक भरोसेमंद सेतु का कार्य किया है। ये समितियाँ ग्रामीण स्तर पर दुग्ध एकत्रीकरण, गुणवत्ता परीक्षण, भंडारण, प्रोसेसिंग और बिक्री तक की संपूर्ण प्रक्रिया को संगठित रूप में संचालित करती हैं। इन समितियों के माध्यम से लाखों छोटे और सीमांत किसानों को सीधा लाभ मिलता है। सहकारी प्रणाली न केवल दुग्ध उत्पादकों को बाजार से जोड़ती है, बल्कि उन्हें नियमित भुगतान, तकनीकी प्रशिक्षण, पशु चारा एवं चिकित्सा सहायता भी प्रदान करती है। इससे किसानों की आय में स्थायित्व आता है और वे बाजार की अस्थिरता से बच पाते हैं। सहकारी समितियाँ मूल्य निर्धारण में भी पारदर्शिता बनाए रखती हैं, जिससे किसानों को उनका उचित मूल्य मिल सके।

हाल के वर्षों में बिहार के डेयरी क्षेत्र में निजी क्षेत्र की सहभागिता भी बढ़ी है। कई निजी कंपनियाँ दूध और दुग्ध उत्पादों के एकत्रीकरण, प्रोसेसिंग और विपणन में सक्रिय हुई हैं। यह भागीदारी सहकारी क्षेत्र के पूरक के

रूप में कार्य करती है। निजी डेयरी इकाइयाँ अधिक तकनीकी संसाधनों, प्रोसेसिंग क्षमता और विपणन नेटवर्क के कारण तेज़ी से उपभोक्ता तक उत्पाद पहुँचाने में सक्षम होती हैं। निजी क्षेत्र की उपस्थिति ने प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है जिससे उत्पादकों को अधिक विकल्प और बेहतर मूल्य प्राप्त होते हैं। साथ ही, उपभोक्ताओं को गुणवत्ता युक्त और विविध डेयरी उत्पाद सुलभ हुए हैं। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में निजी कंपनियों की लाभ केंद्रित रणनीतियों पर आलोचना भी हुई है, फिर भी कुल मिलाकर उनकी भागीदारी ने डेयरी क्षेत्र को अधिक गतिशील और व्यापक बनाया है। दुग्ध एवं डेयरी उत्पादों का मूल्य निर्धारण एक संवेदनशील प्रक्रिया है जिसमें कई घटक शामिल होते हैंकृजैसे पशु आहार की लागत, दुग्ध की गुणवत्ता, संग्रहण एवं परिवहन व्यय, प्रोसेसिंग शुल्क, और बाजार मांग। सहकारी समितियाँ आमतौर पर मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता बनाए रखती हैं और सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मूल्य के अनुसार भुगतान करती हैं। इससे किसानों को एक निश्चित और विश्वसनीय आय सुनिश्चित होती है। विक्रय के संदर्भ में, सुधा जैसे ब्रांड ने बिहार के भीतर ही नहीं बल्कि अन्य राज्यों में भी अपनी पकड़ बनाई है। दुग्ध उत्पादों की शृंखलाकृजैसे दूध, दही, घी, पनीर, मिठाई आदिकृसभी संगठित रूप से प्रसंस्कृत होकर उपभोक्ता तक पहुँचते हैं। निजी कंपनियाँ भी ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और रीटेल आउटलेट्स के माध्यम से विक्रय प्रक्रिया को आधुनिक बना रही हैं, जिससे विपणन के नये मार्ग खुले हैं।

चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

बिहार की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पशुधन और डेयरी क्षेत्र की भूमिका निर्विवाद रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र ने न केवल ग्रामीण आय में वृद्धि की है, बल्कि रोजगार और पोषण सुरक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। परंतु इसके समानांतर, कुछ ऐसी संरचनात्मक और कार्यात्मक चुनौतियाँ भी हैं, जो इसके समुचित विकास में बाधा बनकर खड़ी हैं। बिहार में पशुधन पालन का एक प्रमुख संकट पशु चारे की कमी है। परंपरागत खेती के साथ–साथ चारे की खेती पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया, जिसके कारण वर्ष भर गुणवत्तायुक्त हरे चारे की आपूर्ति बाधित रहती है। कृषि भूमि की सीमितता, चारे की फसलों के लिए जल और संसाधनों की कमी, और कृषि योग्य भूमि पर दबाव बढ़ने के कारण चारे का उत्पादन अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पा रहा है। पशुपालकों को महंगे दर पर बाजार से सूखा चारा या तैयार आहार खरीदना पड़ता है, जिससे उनकी आय का बड़ा हिस्सा व्यय हो जाता है। परिणामस्वरूप, पशुओं की दुग्ध क्षमता में कमी आती है और उनका पोषण स्तर प्रभावित होता है। पशुपालकों की प्रमुख शिकायतों में एक है– पशु चिकित्सा सुविधाओं की असमान और अपर्याप्त उपलब्धता। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में पशु चिकित्सकों की संख्या नगण्य है, और जो हैं भी, वे संसाधनों और आधुनिक उपकरणों की कमी से जूझ रहे हैं। आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता नहीं मिल पाने से पशुओं की मृत्यु दर में वृद्धि देखी जाती है। वैक्सिनेशन अभियान, कृत्रिम गर्भाधान, और रोग परीक्षण जैसी आवश्यक सेवाएँ समय पर नहीं मिल पातीं, जिससे पशुधन की उत्पादकता और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं।

दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के बावजूद, उसके भंडारण और शीतकरण की सुविधाओं की सीमितता एक बड़ी समस्या है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे दुग्ध उत्पादकों के पास न तो शीत भंडारण की सुविधा होती है और न ही दूध को दूर के केंद्रों तक पहुंचाने का साधन। गर्मियों में दूध जल्दी खराब हो जाता है, जिससे उसे फेंकना पड़ता है और उत्पादकों को नुकसान होता है। अनेक बार संग्रहण केंद्रों तक पहुँचाने में देरी होने के कारण दूध की गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है। यह समस्या न केवल उत्पादकों को प्रभावित करती है, बल्कि संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता को भी कम करती है। एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है दृ पशुपालकों में आधुनिक पशुपालन तकनीकों की जानकारी और प्रशिक्षण का अभाव। अधिकांश ग्रामीण पशुपालक परंपरागत ज्ञान पर निर्भर रहते हैं, जिनमें वैज्ञानिक प्रबंधन की समझ की कमी होती है। पशु आहार प्रबंधन, नस्ल सुधार, डेयरी उपकरणों का उपयोग, और स्वास्थ्य देखभाल जैसे विषयों पर उन्हें पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। राज्य स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या सीमित है और वे भी कुछ गिने–चुने जिलों तक ही सीमित रहते हैं। महिलाओं की भागीदारी वाले पशुपालन क्षेत्रों में तो यह समस्या और भी अधिक गंभीर है, क्योंकि उनके लिए लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रायः अनुपलब्ध रहते हैं।

पशुधन एवं डेयरी के कृषि विकास पर प्रभाव

बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन और डेयरी क्षेत्र की भूमिका केवल परंपरागत आय स्रोत तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह क्षेत्र अब कृषि विकास का एक संवाहक बन चुका है। यह न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से

बल्कि सामाजिक और पोषणीय दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। जलवायु परिवर्तन, अस्थिर कृषि उत्पादन और बाजार की अनिश्चितताओं के दौर में पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय एक संतुलनकारी भूमिका निभा रहे हैं। विशेषकर जब खेती की आय में कमी या असमानता हो, तब ये क्षेत्र किसानों को राहत प्रदान करते हैं। पारंपरिक खेती में मौसमी अनिश्चितता, सिंचाई की निर्भरता और बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव जैसी समस्याओं के कारण किसानों की आय अस्थिर रहती है। ऐसे में पशुपालन और डेयरी गतिविधियाँ कृषि आय में विविधता लाने का सशक्त साधन बनती हैं। किसान मुख्य फसल के अतिरिक्त पशुओं से दुग्ध, गोबर, मूत्र जैसे उत्पाद प्राप्त करते हैं, जो सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ पहुँचाते हैं। इससे उनकी कुल वार्षिक आय में इजाफा होता है और वे एक ही स्त्रोत पर निर्भर नहीं रहते। विशेष रूप से सीमांत और लघु किसानों के लिए यह विविधता जीवन जीने के साधनों में स्थिरता लाती है। उदाहरण के लिए, एक किसान जिसकी मुख्य फसल वर्षा पर निर्भर है, वह पशुपालन के माध्यम से वर्ष भर नियमित आय प्राप्त कर सकता है। पशुपालन न केवल कृषि के पूरक के रूप में कार्य करता है, बल्कि यह स्वयं में एक स्वतंत्र उद्यम भी है। बिहार के ग्रामीण इलाकों में बड़ी संख्या में ऐसे किसान हैं, जिनके लिए डेयरी व्यवसाय ही प्रमुख आजीविका का माध्यम है। गाय और भैंस पालन के माध्यम से प्राप्त दूध का प्रतिदिन विक्रय नियमित नकद आय सुनिश्चित करता है, जो दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके अतिरिक्त, पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग जैविक खाद, बायोगैस और कुटीर उद्योगों में भी होता है, जिससे आय के अन्य मार्ग भी निर्मित होते हैं। इस प्रकार, पशुपालन एक बहुउपयोगी एवं लचीला व्यवसाय है, जो कृषि पर निर्भरता को संतुलित करता है।

दूध और डेयरी उत्पाद ग्रामीण परिवारों के पोषण का एक अभिन्न हिस्सा होते हैं। विशेष रूप से बच्चों, वृद्धों और महिलाओं के लिए दुग्ध आहार प्रोटीन, कैल्शियम और अन्य पोषक तत्वों का स्रोत है। पशुपालन के कारण घर में उपलब्ध दूध से आत्मनिर्भरता तो आती ही है, साथ ही यह परिवार की आहार विविधता और पोषण स्तर को भी सुदृढ़ करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जब खाद्यान्न उत्पादन कम होता है या बाजार से उपलब्धता में बाधा आती है, तब पशुपालन एक भरोसेमंद आहार आपूर्ति प्रणाली का कार्य करता है। इससे सामाजिक स्तर पर खाद्य असुरक्षा की स्थिति में कमी आती है और पोषणीय आत्मनिर्भरता को बल मिलता है।

खेती में मौसम की मार, कीट आक्रमण और फसल की कीमतों में गिरावट जैसी समस्याएँ आम हैं, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति डगमगाने लगती है। ऐसे में पशुपालन जोखिम प्रबंधन का एक प्रभावशाली साधन है। भले ही फसल उत्पादन असफल हो जाए, पर यदि पशुओं की देखभाल उचित रूप से की गई हो, तो दूध और अन्य पशु उत्पादों से परिवार की न्यूनतम आय सुरक्षित रह सकती है। इसके साथ ही पशुपालन से उत्पन्न उप–उत्पाद जैसे गोबर खाद के रूप में कृषि भूमि की उर्वरता बनाए रखते हैं, जिससे रासायनिक खादों पर निर्भरता घटती है। यह दीर्घकालिक रूप से खेती को अधिक टिकाऊ बनाता है।

निष्कर्ष

बिहार के कृषि गत क्षेत्र के विकास में पशुधन एवं डेयरी उद्योग की भूमिका पर आधारित यह शोध स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यह क्षेत्र न केवल कृषि उत्पादन की स्थिरता के लिए आवश्यक है, बल्कि समावेशी ग्रामीण विकास के एक सशक्त साधन के रूप में भी कार्य करता है। इस अध्ययन के माध्यम से पशुपालन के आर्थिक, सामाजिक एवं पोषणीय पहलुओं को गहराई से समझने का अवसर प्राप्त हुआ है। वर्तमान में जब कृषि क्षेत्र जलवायु असंतुलन, बाजार की अनिश्चितता और संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब पशुधन और डेयरी ने एक वैकल्पिक, व्यावहारिक और लाभकारी मार्ग प्रस्तुत किया है। कृषि के सतत विकास की अवधारणा पशुधन के सहयोग के बिना अधूरी मानी जाती है। परंपरागत कृषि प्रणाली में पशु न केवल खेतों की उर्वरता बनाए रखने में सहायक होते हैं, बल्कि वे खेत के बाह्य चक्रकृजैसे खाद उत्पादन, जल प्रबंधन, और जैविक खाद्य सुरक्षाकृमें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बिहार में पशुधन की मौजूदगी ने कृषि को बहुस्तरीय लाभ प्रदान किया है, जिसमें अतिरिक्त आय, घरेलू पोषण, और कृषि लागत में कमी शामिल है। इसके अतिरिक्त, पशुपालन ने कृषि क्षेत्र की मौसमी निर्भरता को कम करने का भी कार्य किया है। वर्षा या प्राकृतिक आपदा के कारण यदि फसल उत्पादन प्रभावित होता है, तो पशुपालन से होने वाली आय किसान को आर्थिक असंतुलन से बचा सकती है। इस प्रकार, पशुधन कृषि क्षेत्र के लिए एक संरचनात्मक आधार का कार्य करता है, जो उसे अधिक लचीला और जोखिम–प्रतिरोधी बनाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि बिहार में पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र ने कृषि के विस्तार और स्थायित्व के साथ–साथ समावेशी सामाजिक ढांचे के निर्माण में भी प्रभावशाली

भूमिका निभाई है। यदि इस क्षेत्र को नीतिगत समर्थन, संसाधनों की निरंतरता, और नवाचार के साथ जोड़ा जाए, तो यह राज्य के संपूर्ण ग्रामीण विकास को एक नई दिशा देने में सक्षम हो सकता है।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ–

1. सोनी, आर. एन. (2008). कृषि अर्थशास्त्र के मुख्य विषय. जालंधर–दिल्ली, विशाल पब्लिशिंग हाउस।
2. नागर, विष्णुदत्त, एवं मेहता. (2002). भारतीय अर्थव्यवस्था. भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ एकादमी।
3. मेहता, बल्लभदास. (2001). भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन. भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ एकादमी।
4. मिश्रा, एस. के., एवं पुरी, बी. के. (2008). भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली, हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
5. अग्रवाल, एन. एल. (2008). भारतीय कृषि का अर्थतंत्र. जबलपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ एकादमी।
6. माथुर, बी. एल. (1987). भारतीय अर्थव्यवस्था. जयपुर, आर. बी. एस. पब्लिशर्स।
7. दुबे, आर. एन. (1987). आर्थिक विकास एवं नियोजन. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
8. झिगन, एम. एल. (1995). विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन. नई दिल्ली, कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि.।
9. सिंह, जगदीश, एवं कांशीनाथ. (1967). आर्थिक भूगोल के मूल तत्व. गोरखपुररू वसुंधरा प्रकाशन, पृ. 12।
10. घनश्याम, डॉ. (2023). 'बिहार की अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्व'. प्रभात खबर, 21 सितम्बर, 2023.

Cite this Article-

'डॉ0 नवल किशोर बैठा', 'बिहार के कृषि गत क्षेत्र के विकास में पशुधन एंव डेयरी की भूमिका और इसके प्रभाव', *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:06, June 2025.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i600010

Published Date- 07 June 2025